

अधरकाण्डं (अधर + काण्ड) *der untere Hals* VS. 25, 2.

अधरतस् (von अधर) *adv. unten* P. 5, 3, 35, Sch. HAL. J. im ÇKDr.

अधरमधु (अधर *Lippe* + मधु *Honig*) *n. Speichel* TRik. 2, 6, 18.

अधरस्तात् (von अधर) *adv. unten* HAL. J. im ÇKDr.

अधरस्मात् (abl. von अधर) *adv. unten* ÇKDr.

अधराकु (n. von अधराच्) *adv. von Süden her* VS. 6, 36.

अधराचैन (von अधराच्) *adj. unten befindlich: अधराचैनमकृपोदपा-
मपः* RV. 2, 17, 5.

अधराच्यं (von अधराच्) *adj. dass.: अस्मिन् प्राच्यं विषमस्मिन् पट्टीच्यम्* ।
अधेदमधराच्यं कर्मणेण वि कल्पते ॥ AV. 4, 7, 2.

अधराच् (अधर + 2. अच्) *adj. f. अधराची* VS. 16, 15. *niedwärts ge-
hend, nach unten gerichtet: त्वं सिन्धूवामसोऽधराच्* RV. 10, 133, 2. अ-
धा न्यङ्मुधराङ्गा परेहि AV. 5, 22, 1. 6, 127, 3. 10, 5, 36. *südlich* प्राचः, अ-
पोचः, उदीचः, अधराच् RV. 10, 131, 1. *nach Süden gewendet: यथा साम्य
पुरुषं गन्धारेभ्योऽभिनद्धात्मानवीय तं ततोऽतिवने विमृतेऽस्य यथा तत्र
प्राङ्गा उदङ्गाधराङ्गा प्रथमायीत* KH. AND. UP. 6, 14, 1; vgl. अधराक्.

अधरात् (abl. von अधर) *adv. unten* P. 5, 3, 34. आ ते शुभो वृषभ एतु
पश्चादितरादेधरादा पुरस्तात् RV. 6, 19, 9. असी यो अधराङ्कः AV. 2, 14, 3.
6, 40, 3. RV. 8, 50, 16. 10, 27, 15.

अधरात्तात् (von अधरात्) *adv. dass.: सविता पश्चात्तात्सविता पुरस्तात्स-
वितोत्तरात्तात्सविताधरात्तात्* RV. 10, 36, 14.

अधरीकर (अधर + कर) *sich unterwerfen, besiegen, übertreffen: अ-
धरीकृताः खलु गुणैरुत्थानलता वनलताभिः* ÇAK. 16, v. 1. für द्वरीकृताः.

अधरीण (von अधर) *adj. verachtet (धिकृत, तिरस्कृत)* ÇAT. B. im
ÇKDr.

अधरीम् (अधर + भू) *unterliegen; अधरीभूत unterlegen (in einem Pro-
cess)* JĀG. 2, 17.

अधरेण (instr. von अधर) 1) *adv. unten* P. 5, 3, 35. — 2) *praep. unter-
halb, mit dem acc. P. 2, 3, 31. auch mit dem gen. Sch.*

अधरेयुस् (अधरे loc. von अधर + युस् = दिवस् gen. von दिव्) *adv. P.
5, 3, 22. Vop. 7, 103. AK. 3, 5, 21. den Tag zuvor, vorgestern (Gegens. उ-
तरेयुस्).*

अधरेय (von अधर) *adj. weniger Werth habend, weniger geltend (?)*, von
Würfeln KH. AND. UP. 4, 1, 4.

अधरोत्तर (अधर + उत्तर) 1) *adj. a) der untere und obere; n. sg. als
subst. Niedrigkeit und Höhe, Sinken und Steigen: व्यत्यये कर्मणां साम्यं
पूर्ववच्चधरोत्तरम्* JĀG. 1, 96. *ein Drunter und ein Drüber, eine Um-
drehung der bestehenden Verhältnisse: स्वाम्यं च न स्यात्कस्मिंश्चित्प्र-
वर्तताधरोत्तरम्* M. 7, 21. *अधर्मेण जितो धर्मः प्रवृत्तमधरोत्तरम्* MBH. 1,
3451. — b) *vorangehend und nachfolgend, früher und später: यश्चाध-
रोत्तरान्वान्विगीतान्नावबुध्यते* M. 8, 53. — 2) *n. sg. Anrede und Ent-
gegnung: श्रुतं भवद्दिग्धरोत्तरम्* ÇAK. 69, 17; vgl. पूर्ववादिन् und उत्तर-
वादिन् JĀG. 2, 17. — Vgl. उत्तराधर.

अधरोष्ठ oder अधरोष्ठ (अधर + ओष्ठ) *die Unter- und Oberlippe, die
Lippen: अङ्गुलिसेवताधरोष्ठं मुखम्* ÇAK. 73. PĀN. AT. 43, 11. *भिन्नवर्णाधरोष्ठं
मुखम्* MBH. 82. पञ्चविम्बाधरोष्ठी (v. 1. रोष्ठ) 80.

अधर्म (3. अ + धर्म) *m. 1) Ungesetzlichkeit, Unrecht* ÇAT. Br. 3, 7, 3, 7, 5,
2, 4, 13. KH. AND. UP. 7, 2, 1. *अधर्मस्त्वया चरितः* Nir. 2, 10. *कर्मणां च विवे-*

कार्यं धर्माधर्मा व्यवचयत् M. 1, 26. न ब्राह्मणवधाद्व्यानधर्मो विद्यते भुवि
8, 381, 1, 29, 81. 2, 206, 3, 11, 4, 171—174. 6, 64. 8, 12, 14. 18, 24. 122, 304.
353, 9, 249. 10, 106. 11, 228, 229. 12, 20, 21, 23. 118. R. 1, 2, 17. 2, 12, 33.
BRĀHMAN. 2, 34. BHAG. 18, 32. ÇAK. 71, 4. अधर्मज्ञ M. 8, 59. अधर्मेण *auf eine
unrechte oder ungesetzliche Weise: अधर्मेण च यः प्राहु पश्चाधर्मेण पृच्छति*
M. 2, 114. *यस्त्वधर्मेण कार्याणि मोहत्कुर्यान्नराधिपः* 8, 174. अधर्मदण्डन
eine ungerechte Bestrafung 127. Erscheint unter dem Namen दारिक
als einer der 18 Diener der Sonne am 2ten Thor, Vjāpi zu H. 103. —
2) *N. pr. eines Prāgāpati, verschiedene Pur. im VP. 49, N. 2.*

अधर्ममय (von अधर्म oder अ + धर्ममय) *adj. der Ungesetzlichkeit erge-
ben* ÇAT. Br. 14, 7, 2, 6. = BRH. ĀR. UP. 4, 4, 5.

अधर्मास्तिकाय (अधर्म + अस्तिकाय) *m. die Kategorie der Ungesetz-
lichkeit (bei den Ġaina's)* COLEBR. Misc. Ess. I, 385.

अधर्मिष्ठ (3. अ + धर्मिष्ठ) *adj. nicht das Gesetzliche, Rechte tuend:
न तान्पश्यत्यधर्मिष्ठाः कृतप्राश्नापि मानवाः* Suçr. 2, 169, 11. *ungesetzlich,
unrechtmässig: पितृविक्रमधर्मिष्ठम्* R. 2, 23, 13. कर्म 3, 89, 8.

अधर्म्य (3. अ + धर्म्य) *adj. f. आ = अधर्मिष्ठ. अधर्म्यां बहि धर्मो ह्यस्या
न विद्यते* R. 1, 27, 18. पश्चानो (विवाहानो) तु त्रयो धर्म्या दावधर्म्या स्मृता-
विह M. 3, 25. वचः R. 2, 21, 22. राज्यम् 48, 19.

अधवा (3. अ + धव) *f. Wittve* AK. 2, 6, 1, 17. H. 531; vgl. विधवा.

अधश्चर (अधस् + चर) *m. Dieb (längs dem Boden kriechend)* HĀR. 45;
vgl. अधश्चर.

अधश्चर (अधस् + चर) *m. = नीचचर इति केचित्* ÇKDr.; vgl. अधश्चर.

अधःशय (अधस् + शय) *adj. f. आ auf der Erde liegend* ÇAT. Br. 6, 6, 3, 6.
KĀT. Ç. 16, 4, 39.

अधःशय्य (अधस् + शय्या) *adj. auf dem Erdboden schlafend* JĀG. 1,
70. R. 5, 66, 13.

अधःशय्या (wie eben) *f. das Schlafen auf dem Erdboden* M. 2, 108
(KULL.: अथवाशयनत्रयपामधःशय्यां न तु स्वापिडलशाविलम्बेव).

अधःशिरस् (अधस् + शिरस्) *adj. 1) mit nach unten gerichtetem Kopfe
R. 2, 69, 10. — 2) n. N. einer Hölle* VP. 207 (Wilson im Text und im
Index Adhos'iras; vgl. अधोमुख).

अधो 1) *adv. P. 5, 3, 39. Vop. 7, 108. a) unten* Nir. 2, 11. H. 1526. अधः
स्विदासीऽडुपरि स्विदासीऽत् RV. 10, 129, 5. 119, 11. अध इव हि मनुष्य-
लोकः ÇAT. Br. 14, 6, 1, 10. (= BRH. ĀR. UP. 3, 1, 8.) INDR. 5, 10. स (प्रजापतिः)
स्त्रियं समृजे तो मृष्टाध (so dass das Weib unten ist) उपास्त तस्मात्स्त्रि-
यमथ उपासीत ÇAT. Br. 14, 9, 4, 2. = BRH. ĀR. UP. 6, 4, 2. *auf dem Erdbö-
den: अधः शयीत* ÇAT. Br. 1, 1, 1, 11. M. 11, 224. vom pudendum muliebre
TRik. 2, 6, 21. hierher gehört vielleicht अधो रमणीयम् beim Sch. zu P.
5, 3, 39. — b) *hinunter, hinab: अधः पश्यस्व मोपरि* RV. 8, 33, 19. अध-
श्चार्धं च प्रसृतं ब्रह्मैवेदम् MUND. UP. 2, 2, 11. विलोक्य ÇAK. 32, 20. अथलोक्य
99, 7. अधोऽवेत्तिन् PĀN. AT. I, 214. अधो ऽधो पश्यतः कस्य मद्विमा नोप-
चीयते HIT. II, 2. तित H. 1482. अध N. 20, 1. यावत्तत्र व्रजत्यधः (von der
Speise) M. 11, 153. यात्यधः PĀN. AT. II, 74. मुखात्पतत्यधो विशीर्यमाणा
दशनाः सकृद्यथा R. 2, 12, 103. zur Hölle TRik. 1, 2, 1. व्यसन्यधो ऽधो व्र-
जति स्वर्पात्यव्यसनी मृतः M. 7, 53. 6, 35, 37. पतति क्षुपयन्नधः 11, 172. —
c) *von unten her: आगतः* P. 5, 3, 39, Sch. — 2) *praep. unter, unterhalb
(auf die Frage wo oder wohin): a) mit dem acc.: पृथिवीर्धो अस्तु विश्वाः*